28 मार्च 2024:

स्मृतियां, जो कालांतर में रचती हैं इतिहास की अनंत धाराएं: देवेन्द्र चौबे

[बक्सर के ग्रामीण क्षेत्र के इतिहास के कुछ अनुभव]

स्मृतियां अनंत होती है। अनंत होती है, उसकी धाराएं, अंतरंगता और जीवन को देखने , समझने की दृष्टियां। बिना इसके मानव समाज के इतिहास को समझना कठिन है। लोक समाज में जो स्मृतियां उपस्थिति होती हैं, वह क्षेत्रीय इतिहास को iसिर्फ समझने में ही मदद नहीं करती है, अपितु उनका जिस व्यक्ति के साथ रिश्ता होता है, उसके बहाने संबंधित समाज की उस चेतना और उसकी सामाजिक गतिशीलता का विवरण देती है जिन्हें कई बार बड़ी - बड़ी किताबें भी दर्ज नहीं कर पाती है।

उदाहरण के लिए, पिछले दिनों जब गांव के बुजुर्ग के जाने के बाद हम सब नदी तट पर बैठे हुए गांव के बारे में बातचीत कर रहे थे, तब प्रसंगवश संन्यासी बाबा की चर्चा हुई और पता चला कि 1942 में गांधी के आह्वान के बाद अंग्रेजों द्वारा 1764 के बक्सर युद्ध की स्मृति में बनवाएं गए विजय स्तंभ को तोड़ने के आरोप में जेल गए। अंग्रेज सरकार की यातनाएं सही। पर माफी नहीं मांगी। बाद में जेल से छूटने के बाद संन्यासी हो गए।

अब इस संदर्भ में कुछ रखा नहीं है। पर, जब हम बक्सर के क्षेत्रीय इतिहास पर बात करेंगे और उसमें अहिल्या मंदिर और गौतम ऋषि के लिए प्रसिद्ध गांव अहिरौली की चर्च होगी तब यह संदर्भ 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन को समझने में मदद करेगा कि कैसे गांधी के आह्वान पर किसान और ग्रामीण मजदूर घरों से बाहर निकल पड़ते थे और अंग्रेज सरकार को चुनौती देते थे। यह बड़ी बात है।और दर्ज कराने लायक।

यह भी इतिहास ही है। इसके बिना भारत के पूरे इतिहास को कैसे समझा जा सकता है? और लोक क्षेत्र में जाकर बिना स्मृतियों के संकलन के इस तरह के छोटे - छोटे इतिहास को सामने लाना असंभव है।

यही तो लोकसमाज का इतिहास भी होता है। जितने लोग, उतने इतिहास। पर तथ्य पक्का, वृतांत जैसा भी हो। हां, यह जरूरी है कि इसका सैद्धांतिकीकरण और व्यवस्थित लेखन करना जरूरी है, तभी स्मृतियों के होने का अर्थ भी है; जैसा कि पिछली सदी के सातवें-आठवें दशक में रणजीत गुहा, शाहिद अमीन, ज्ञानेंद्र पाण्डेय, गौतम भद्र आदि जैसे इतिहासकारों ने किया। यही कार्य हिंदी में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने किया है।

यह महत्वपूर्ण संदर्भ है जो किसी भी क्षेत्र के इतिहास को समझने में मदद करता है।

....

* श्री कृष्णा नंद चौबे (1940-2024), ग्रामीण इतिहास कार्यशाला से जुड़े एक ग्रामीण बुद्धिजीवी।